International Journal of Early Childhood Special Education (INT-JECSE)
DOI: 10.48047/intjecse/v13i2.21147 ISSN: 1308-5581 Vol 13, Issue 02 2021

# श्री लाल शुक्ल की औपन्यासिक विशेषताएं

# The distinctive features of Shri Lal Shukla's novels

**Dr. Rajshree P. More**
Assistant Professor & Head, Department of Hindi, OUCW, Koti, Hyderabad.

**Abstract:**

Hindi novels, Shri Lal Shukla holds a prominent position. He is regarded as a popular, respected, widely-discussed, and esteemed novelist. Shukla is known as a novel writer who has provided a new dimension to the world of Hindi novels. His novels have successfully unearthed all the intricacies of the novel-writing craft in the Hindi literary world. Through his novels, he has explored various aspects of life, contributing to different realms of human experience.

Shri Lal Shukla's novels have ventured into the diverse fields of life, and he has successfully portrayed the finer nuances of the novel-writing art. His works have added a novel perspective to the Hindi literary landscape. Shukla has skillfully delved into the intricacies of the human psyche, providing a beautiful expression to the sensitive emotions of human beings. In this paper, an attempt has been made to analyze, evaluate, and present a review of Shri Lal Shukla's novels.

---

साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति भी है और काव्य की सृष्टि भी है, उत्पत्ति भी है और उपलब्धि भी।साहित्य एवं जीवन का पारस्परिक संबंध अक्षुण्ण एवं अविच्छिन्न है। जीवन की परिवर्तनशीलता के साथ-साथ उपन्यास साहित्य में भी परिवर्तन अवश्यंभावी है। साहित्य की विधाओं में उपन्यास एक सशक्त माध्यम है। उपन्यास के द्वारा संपूर्ण मानव जीवन और समाज अपनी समस्त भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर सकता है। विभिन्न परिवेश और परिस्थितियाँ विभिन्न साहित्यिक मूल्यांकन के नये मापदंड प्रस्तुत करती है। क्षण-क्षण में बदलता जीवन, साहित्य के नये मानदंड़ों की अनिवार्य शर्त है। मनुष्य जीवन ही साहित्य की आधारशिला है। मानव जीवन के इन विभिन्न चित्रों को प्रस्तुत करने में उपन्यास कला जितनी सक्षम है, उतनी अन्य कलाएँ नहीं हैं। यह कहा जा सकता है कि "उपन्यास साहित्य जीवन का दर्शन है। ऐसा दर्शन जिसमें दृश्य भी है और आदर्श भी, अनुभूति भी है और कृति भी, आलोक भी है और रश्मि भी।"[1] इसकी पुष्टि डॉ. भगीरथ मिश्र के शब्दों में "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झांकी प्रस्तुत करने वाला गद्य साहित्य उपन्यास कहलाता है।"[2] संवेदनात्मक गतिशील जीवन की अभिव्यक्ति उपन्यास में होती है और उस गति को व्यक्त करती है घटनाएँ।

अतः उपन्यास का प्रथम लक्षण है-परिणामयुक्त घटना अर्थात् एक सुनिश्चित कथानक। यह घटनावली कुतूहल प्राप्ति द्वारा पाठकों का मनोरंजन करती है। इसके द्वारा पाठक जानते हैं कि आगे क्या हुआ, और समझते हैं कि जो हुआ वह कैसे हुआ। ये प्रवृत्तियाँ क्रमशः घटना-तत्व चरित्र- तत्व पर बल देते हैं। उपन्यास द्वारा मनुष्य 'स्व' का अन्वेषण करता है। उपन्यास वह बताता है 'जो हम हैं', इसीलिए वह जीवन के यथार्थ चित्र पर बल देता है। उपन्यास में व्यवहारिक जीवन तथा तात्कालिक परिस्थितियों के चित्रण पर मुख्य रूप से बल रहता है। उपन्यास आज एक सफल योद्धा की तरह खड़ा है। हिंदी उपन्यासकारों में श्री लाल शुक्ल का उल्लेखनीय स्थान है। यह सत्य है कि अच्छे उपन्यास या अच्छे विचार का जितना भी विरोध बढ़ेगा-जितने भी उस पर हमले होंगे, उसकी ऊर्जा और सफलता अमरबेल की तरह बढ़ती ही जायेगी।

हिंदी उपन्यासों में श्री लाल शुक्ल का मूर्धन्य स्थान है। वे एक लोकप्रिय, सम्माननीय, बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। शुक्ल जी के उपन्यासों ने हिंदी जगत् की उपन्यास विधा को एक नवीन आयाम प्रदान किया है। उन्होंने उपन्यास जगत की समस्त बारीकियों को उकेरने का कार्य सफलता के साथ किया है। उन्होंने जीवन के अधिकाधिक क्षेत्र का अपने उपन्यासों के माध्यम से भ्रमण किया है। श्रीलाल जी ने मनुष्य की संवेदनशील भावना को एक सुंदर अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। प्रस्तुत प्रपत्र में श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का विवेचन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।उपन्यास में प्रस्तुत जीवन, हमारे यथार्थ जीवन का आभास देते हुए भी मूलतः उस जीवन से भिन्न, अपेक्षाकृत सीमित एवं गहन होता है। प्रख्यात फ्रेंच उपन्यासकार मोपासाँ के शब्दों में-"हमारा साधारण, नित्यप्रति का जीवन पूर्णतया अप्रत्याशित, परस्पर प्रतिकूल, असंगत, असंबद्ध, क्रमहीन तत्वों से बना हुआ है। यह अरुचिकर और अनर्थों से ओतप्रोत है। इसमें अस्पष्टता है, असंगति और अंतर्विरोध है। जीवन के इन सब लक्षणों को 'प्रकीर्ण घटनावली' ('संड्री हैपनिंग्स') शीर्ष के अंतर्गत संग्रहीत किया जा सकता है।"[3] श्री लाल जी विवेकशील, प्रखर परंतु संवेदनशील हैं और बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्तित्व हैं। इसीलिए 50 के पश्चात् वाले उपन्यासकारों में वे काफी लोकप्रिय हैं। इस युग के सम्माननीय, प्रतिष्ठित, बहुचर्चित उपन्यासकारों में शुक्ल जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। उनके उपन्यासों में एक नवीन प्रवाह व प्रयोग दर्शित होता है और व्यंग्य इनका एक आधुनिक प्रयोग है। इस प्रकार उन्होंने हिंदी उपन्यास कला को एक नवीन आयाम दिया है। कहा जा सकता है कि व्यंग्य उनके प्रत्येक उपन्यास को स्फूर्ति और तंदरुस्ती प्रदान करता है। यही उनके साहित्य का प्रधान तत्व है, या यूँ कहा जा सकता है कि 'व्यंग्य' ही उनके सृजन की आत्मा है।

उनकी अभिव्यक्ति का अंदाज बड़ा ही निराला था। शिक्षा काल में ही उन्होंने दो उपन्यास लिखे। 1953 में मित्रों के प्रोत्साहन से उन्होंने लिखना नियमित रूप से प्रारंभ किया। अपने लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए वे स्वयं कहते हैं- "लेखन मेरे लिए अपनी गहनतम संभावनाओं के अन्वेषण का माध्यम है। यह मेरे लिए मुक्ति की एक प्रक्रिया है। बँधे होने की छटपटाहट मेरे लेखन की प्रेरक शक्ति है। वह रोजमर्रा की आदतों और सामाजिक प्रवृत्तियों का भी निरूपण करती है।"[5] श्री लाल शुक्ल का परिचय डॉ. चंद्रप्रकाश के शब्दों में इस प्रकार दिया जा सकता है-"श्री लाल शुक्ल उन लेखकों में से हैं, जिन्हें अपने प्रति कभी कोई गलतफहमी नहीं रही। उनका दृष्टिकोण इस संदर्भ में नितांत वस्तुपरक है। न तो अत्यधिक प्रशंसा उन्हें प्रिय है और न अत्यधिक आलोचना। अपना मूल्यांकन वे स्वयं करते हैं।"[4] वैसे तो उपन्यास मानव मन की उलझनों को सुलझाने का प्रयास करता है। यही कारण है कि यह विधा प्रारंभ से ही अन्य विधाओं से अधिक सशक्त और सफल रहीं। इसकी लोकप्रियता के कारण ही इस युग में उपन्यास लिखने वालों की संख्या में भारी उछाल आया। उन्हीं में श्री लाल शुक्ल का अग्रणीय स्थान है। उन्होंने अपने कथ्य में तत्कालीन मानव जीवन की यथार्थ स्थिति को अंकित कर दिया। अपने उपन्यासों के माध्यम से अपनी कृतियों में युगीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश का वर्णन प्रस्तुत किया।

श्री लाल जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से तेजी से बदलते जीवन मूल्यों और नवीन संभावनाओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया। उन्होंने वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन की विडंबनाओं को भाषायी अभिव्यक्ति देने का सतत् प्रयास किया।

श्री लाल शुक्ल के निम्नलिखित उपन्यास इस प्रकार हैं-

**1. अज्ञातवास-** इस उपन्यास में गाँव और शहर के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। गाँवों में उत्पन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है। शहरी जीवन में लोग मुखौटे पहने अपना

असली चेहरा छुपाते हैं। राजनीकांत और उसकी पत्नी रानी के मध्यमवर्गीय जीवन के माध्यम से वर्तमान समाज की बौखलाहट का सजीव वर्णन हुआ है। मनुष्य के आपसी रक्त संबंध की तड़क इसमें साफ दिखाई देती है। परिवारों के आपसी संबंध और उसकी टूटन का मर्मस्पर्शी वर्णन है। सदियों से चली आ रही जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण की परंपरा का सूक्ष्म प्रस्तुतीकरण किया गया है। जमींदारों द्वारा गरीब किसानों पर किये गये जुल्म, शोषण, दहशत आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास का कथानक कुछ इस प्रकार लिखा जा सकता है-उपन्यास का प्रमुख पात्र रजनीकांत सिंचाई विभाग का सुपरिंटेंडेंट इंजिनियर है। रजनीकांत की पत्नी ग्रामीण है। वह अपने शहरीपन के नशे में ग्रामीण पत्नी को त्याग देता है। इनकी एक बेटी है जिसका नाम प्रभा है। वह एक संवेदनशील व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करती है जो अपने प्रेमी का इंतजार कर रही होती है। उसका प्रेमी अमेरिका से शिक्षा प्राप्त करके आने वाला है। पिता के मित्र डॉ. गंगाधर, प्रो. विनायक, वकील देवदत्त और घोषाल से उसे अपनी माँ के बारे में कुछ संकेत मिलते हैं और एक रात अपने पिता से माँ के बारे में जान जाती है।

इन सारे मित्रों के आपसी वार्तालाप से समाज के ग्रामीण और नगरीय जीवन का यथार्थ वर्णन श्री लाल शुक्ल जी ने बड़े ही प्रभावकारी रूप में प्रस्तुत किया है। शिक्षा के अभाव में किस प्रकार वकीलों के दाँव-पेंचों, शिकंजों, धोखेबाजी, अहंकार अमानवीय प्रवृत्ति तथा हकीमों के अन्याय आदि हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। इस प्रकार श्री लाल शुक्ल का यह उपन्यास शहरी और ग्रामीण जीवन को साथ लेकर चलने की सफल यात्रा में सशक्त हुआ है।

**2.सूनी घाटी का सूरज-** यह उपन्यास श्री लाल शुक्ल का प्रथम उपन्यास है। यह उपन्यास ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। ग्रामीण जीवन में भ्रष्टाचार का सजीव वर्णन किया गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र रामदास है। रामदास के माध्यम से ही एक संपूर्ण पीढ़ी की तेजस प्रतिभा की उपेक्षा दर्शायी गयी है। यह उपन्यास संस्करणात्मक शैली का उदाहरण है। रामदास एक गरीब किसान का बेटा है। उसके जीवन में अनेक प्रकार की ग्रामीण समस्याएँ आती रहती हैं। रामदास के गाँव पर अनेक प्रकार की संक्रामक आपदाएँ तो हैं ही परंतु वह प्राकृतिक प्रकोप का शिकार होने से भी नहीं चूकता। "रोगों के संक्रामक आघातों और प्राकृतिक विपत्तियों को झेलने के सिवाय भाग्य के लिए और कोई औषधि नहीं है।"[6]

उपन्यास में पूँजीवादी मनोवृत्ति का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसमें शोषण के विभिन्न उपायों को उजागर किया गया है। उपन्यास नायक रामदास का एक मात्र उद्देश्य यही था कि "गाँव में जाना, दलितों की शक्ति बनना, अशिक्षितों को विद्या देना तथा उनकी निराशा, उनकी मूर्च्छा को समाप्त करके उन्हें नई चेतना देना।"[7] अतः शिक्षित स्वावलंबी रामदास का चरित्र उपन्यास के शीर्षक को सार्थक बनाता है। भारत के असमंजसतापूर्ण भविष्य निर्माण के संदर्भ में यह एक प्रतीकात्मक रूप की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

**3.राग दरबारी-** श्री लाल शुक्ल का सबसे लोकप्रिय और सफल उपन्यास 'राग दरबारी' है। इसमें शिवपालगंज नामक गाँव के परिवेश का वर्णन है। यदि सूक्ष्म रूप से देखा जाये तो इसकी कथावस्तु देशव्यापी है। वैद्यजी उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं जिनके दो बेटे-बद्री पहलवान और रुप्पन हैं। इनकी बहन का बेटा रंगनाथ है। वैद्य होने के साथ-साथ बहु पदाधिकारी है, वे छंगामल इंटरकॉलेज के मैनेजर, कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और अपने दरबारी सनीचर के आड़ में ग्राम संस्था के प्रधान हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, अन्याय, शोषण, चुनावी छद्म, भाई-भतीजावाद, धोखादड़ी, लूट- खसोट, न्यायिक दाँव-पेंच आदि अराजकताओं का सशक्त चित्रण प्रस्तुत किया है।

यह एक ऐसा उपन्यास है जो गाँव और शहरी के मध्य एक सेतु बंधन का कार्य करता है। गाँव और शहर के मध्य जो रेखा है उसे पाटते हुए उन कुप्रवृत्तियों को उजागर करता है। वास्तव में यही प्रवृत्तियाँ जनतंत्र को खोखला बना रही हैं। स्वयं श्री लाल शुक्ल कहते हैं- "राग दरबारी का संबंध एक बड़े नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिंदगी

से है, जो आजादी के बाद प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यही उस जिंदगी का दस्तावेज़ है।"[8]

वैद्य जी के चरित्र को निम्न पंक्तियाँ साकार रूप प्रदान करती हैं-"अंग्रेजों के जमाने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखलाने लगे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकीमों के लिए श्रद्धा दिखाते थे। वे देश के पुराने सेवक थे।"[9] इस प्रकार वैद्य जी की छत्रछाया में शिवपाल गंज के कॉलेज में गुटबंदी, राजनीति तथा को- ऑपरेटिव यूनियन में गबन आदि होता है। ग्राम प्रधान भी वैद्यजी का दरबारी है। उनके दरबार में गीता, धर्मयुद्ध, गाँधीवाद, प्रेम, हिंसा, प्रजातंत्र से संबंधित भाषण आदि हुआ करते थे। परंतु कथा के अंत में वैद्य जी के पुत्रों दद्वारा दुश्कर्मों से पलायन किया जाता है।

संपूर्ण कथावस्तु के विवेचन से यह कहा जा सकता है कि अन्य परंपरागत उपन्यासों से यह एक अपनी अलग परंपरा बनाता है। व्यंग्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि उसे कथावस्तु का रूप मिल जाता है। कई प्रासंगिक कथाओं को सहज भाव से जोड़ दिया गया है। इसमें भावुकता, मर्मस्पर्शिता तो दृष्टिगोचर नहीं होती परंतु ग्रामीण जीवन के उतार-चढ़ाव को परत्-दर-परत् इस प्रकार खोला गया है कि पाठक स्वयं को उसमें खो देने को मजबूर हो जाता है।

**4.आदमी का जहर-** यह उपन्यास रोचकता उत्पन्न करने वाला है। यह एक जासूसी उपन्यास है। इसका कथानक कुछ भयानक यथार्थ को प्रस्तुत करता है। जासूस और भय ये दोनों भाव सहजता से पाठक में उत्सुकता को बढ़ावा देते हैं।

इस कथा का विकास उपन्यास के नायक हरिश्चंद्र के रूबी से प्रेम करने की दास्तान को लेकर होता है। हरिश्चद रेफ्रिजिरेटर का व्यापारी है और रूबी एक बहुत ही खूबसूरत स्त्री है। रूबी की सुंदरता ही हरिश्चंद्र को उसका पीछा करने पर मजबूर कर देती है और एक दिन रूबी और रिपोर्टर अजीत सिंह को वह होटल डैयमण्ड में देखता है। हरश्चिंद्र इस बात को सहन नहीं कर पाता और गोली चला देता है। परंतु पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से यह आश्चर्यजनक बात सामने आती है कि अजीत सिंह की मृत्यु गोली से नहीं बल्कि जहर से हुई है। पुलिस रूबी और एक अजीत सिंह के मित्र को हिरासत में ले लेती है। पुलिस की तहकीकात के बाद यह पता चलता है कि गुनाहगार व्यभिचारी नेता शक्तिप्रकाश है। रूबी पर पुलिस का संदेह इसीलिए जाता है कि अजीत उसे ब्लैकमेल करता है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में अंत तक सस्पेंस बना रहता है। कथा के विकास में यथार्थता व्याप्त है। आधुनिक जीवन के मूल्यों को बड़े ही पारदर्शी रूप में उजागर किया गया है। वास्तव में यह उपन्यास हिंदी के उन असंख्य कथा प्रेमियों को स्नेह समर्पित है जिनकी परिधि में दोस्तावस्की से लेकर काफ्का और कामु तथा जैनेंद्र से लेकर अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे विशिष्ट कृतिकारों का अस्तित्व है।"[10]

**5.सीमाएँ टूटती हैं-** श्री लाल शुक्ल का एक आधुनिक विचारधारा से संबंधित उपन्यास है। कथानक में हत्या, प्रेम, पारिवारिक कश्मकश, मित्रता का संघर्ष, व्यापारी ऊहापोह, विभिन्न दाँव-पेंच, जीवन और संबंधों के प्रति असमंजसता आदि का कौतुहलपूर्ण चित्रण हुआ है। कहा जा सकता है कि यह उपन्यास रोचकता से परिपूर्ण है।

**6.मकान-** प्रस्तुत उपन्यास भी आधुनिक जीवन की विसंगतियों, कुंठाओं, असंगतियों, तनावों को लेकर लिखा गया है। इसमें संगीत की पृष्ठभूमि है जो कि डायरी शैली में लिखी गयी है। यह कथानक सितारवादक नारायण जो कि नगर- निगम का असिस्टेंट भी है को लेकर विकसित होता है। नारायण का सपना अपना एक 'मकान' है। परंतु जिसके अलॉट होते ही नारायण की हत्या हो जाती है। श्री लाल शुक्ल ने इस उपन्यास के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर समाज में व्याप्त रिश्वतखोरी, गुंडागर्दी, खून, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, नेताओं की अनैतिकता आदि का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के बाद तेज़ी से विकास योजनाएँ तो लागू की गयीं परंतु उतनी ही तेजी से भ्रष्टाचार का सिलसिला भी आगे बढ़ा। वर्णित संपूर्ण समस्याएँ तेजी से काल की तरह फैलती हैं। श्री लाल शुक्ल ने इसी समस्या को 'मकान' के माध्यम से व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत संदर्भ द्वारा इस प्रकार विवेचना की जा सकती है- "नारायण मकान की समस्या को लेकर बेचैन रहा है, किंतु अभी तक कोई मकान नहीं मिला था। किंतु इसकी आशाएँ एक फटीचर एकाउंटेंट की थीं। जो सात साल पुरानी साइकिल के लिए विकल हो रहा था। यह जीवन की दूसरी ट्रेजेडी है कि हम जैसों

के जीवन को, जिनकी ललकार दसों दिशाओं से गूँज रही हैं, शेर-चीते नहीं, छोटे-छोटे चूहे खाते हैं। "[11] अतः कहा जा सकता है कि एक प्रसिद्ध कलाकार परंतु मध्यमवर्ग की नौकरी पेशा व्यक्ति किस प्रकार का जीवन बिताने के लिए बाध्य है। ऐसे सिस्टम पर धिक्कार है।

**7.पहला पड़ाव-** 'पहला पड़ाव' उपन्यास भी स्वतंत्रता के बाद की भारत के किसानों, मजदूरों आदि की दारुण कहानी लेकर प्रस्तुत होता है। इसमें बिलासपुर जैसे गाँव की यथार्थ शोषणपूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। वहीं अन्याय, शोषण, अत्याचार, बढ़ती प्रशासन की कुव्यवस्था, शिक्षा, मजदूरों के शारीरिक, आर्थिक और मानसिक शोषण की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। उपन्यास में स्थान-स्थान पर व्यंग्य के माध्यम से निर्मम चोट करने का प्रयास निरंतर है। इस प्रकार 'पहला पड़ाव' उपन्यास इंजिनियरों, ठेकेदारों, राजनेताओं, नकली डॉक्टरों, भ्रष्टाचारी पत्रकारों का चित्रण है।

कुछ उपन्यासों में सस्पेंस भी बनाने में सफल हुए हैं। पता नहीं आगे क्या होगा, खूनी कौन है, दोषी कौन है, कौन पात्र इसमें मासूम और मजबूर है, कौन सा पात्र तकदीर का मारा है इस प्रकार की जिज्ञासा या उत्कंठा लगातार पाठक में बनी रहती है।

लगभग सभी उपन्यासों में स्वतंत्रता के पश्चात के समाज की कुरीतियों पर करारा व्यंग्य करते हुए प्रहार किया गया है। किसी भी क्षेत्र पर व्यंग्य कसने में उपन्यासकार सक्षम है। जैसे-'मकान' उपन्यास में हवलदार नारायण से कहता है- "अस्पतालों और अखबारों में इतना सम्मान मुझे कभी नहीं मिला। यह सब इसी फूटी खोपड़ी की बदौलत है। "[12] एक नेता कहता है-"इनकी खोपड़ी बड़ी चक्करदार है। इसके सिर के बीच एक सादी कील ठोक दो, निकालकर देखेंगे तो कील नहीं रहेगी, स्क्रू बन जायेगी। "[13]

अतः स्वयं शुक्ल जी ने व्यंग्य शैली के बारे में कहा है- "व्यंग्य मेरी रचना का एकमात्र मूल नहीं है। और शैलियाँ भी कविता को छोड़कर मुझे बराबर आकर्षित करती रही हैं। मेरी समझ में व्यंग्य लिखना उतना ही कठिन या सरल है जितना किसी और प्रकार का साहित्य लिखना। "[14]

**निष्कर्ष** रूप में कहा जा सकता है कि श्री लाल शुक्ल के उपन्यास साहित्यिक रूप से काफी सक्षम हैं। उपन्यास में व्यंग्य यह एक नयी शैली आपने आधुनिक साहित्य को प्रदान की है। सामान्य रूप से उपन्यास गंभीर, भावुक, शृंगारिक आदि भावों को लेकर विकसित होते हैं। परंतु श्री लाल शुक्ल ने इसमें जासूसी, व्यंग्य, यथार्थ, राजनीति, समकालीन प्रेम, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, मध्यवर्गीय कुंठा, अपमान, मजबूरी आदि की अभिव्यक्ति बड़े ही सफल रूप से की है।

**संदर्भ**

1. आठवें दशक के राजनीतिक उपन्यासों में यथार्थवाद, राजश्री पी.मोरे,
2. भूमिका (प्रथम पृष्ठ), मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, 2007 श्री लाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का राजनीतिक संदर्भ, सीमा मिश्रा, पृ.01, नैशनल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2011
3. Novelists of the Novel (Mirrian Allot) Guy de Moupussant, Introduction to Pierre at Jean-1888, p.53-54
4. डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, राग दरबारी कृत साक्षात्कार-पृ.21
5. राग दरबारी, श्री लाल शुक्ल-पृ.210
6. सूनी घाटी का सूरज, श्री लाल शुक्ल-पृ.51
7. सूनी घाटी का सूरज, श्री लाल शुक्ल-पृ.132
8. राग दरबारी को 1969 का साहित्य अकादमी पुरस्कार
9. मकान 1978 में मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य परिषद का पुरस्कार
10. आदमी का जहर, श्री लाल शुक्ल-पृ.3
11. मकान, श्री लाल शुक्ल-पृ.11
12. मकान, श्री लाल शुक्ल-पृ.140
13. मकान, श्री लाल शुक्ल-पृ.40
14. श्री लाल शुक्ल के उपन्यास राग दरबारी का राजनैतिक संदर्भ, सीमा मिश्रा-पृ.63